८. मित्रता

–चेतना

संभाषणीय

विपत्ति में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है, स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से उनके मित्रों के नाम पूछें । ● विद्यार्थी किसे अपना सच्चा मित्र मानते हैं, बताने के लिए कहें । ● किन–किन कार्यों में मित्र ने उनकी सहायता की है, पूछें । ● विद्यार्थी अपने–अपने मित्रों के सच्चे मित्र बनने के लिए क्या करेंगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

उसने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया । वह बार–बार मुझे देखे जा रहा था । मैं इतनी हैरान थी कि कुछ समझ नहीं पा रही थी । हम दोनों एक–दूसरे को टुकुर–टुकुर देख रहे थे । उसका चेहरा बदला–बदला–सा लग रहा था । ऐसा लग रहा था कि वह बहुत दूर से और बहुत थककर आया है । वह कुछ बोल नहीं रहा था । बस खड़ा था । मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहती थी लेकिन कुछ बोल नहीं पा रही थी । वह देखता रहा । गुस्से में थी । मैंने उसका हाथ झटका और तेजी से आगे की ओर बढ़ गई । मैंने एक पल भी पलटकर नहीं देखा । वह शायद वहीं पर खड़ा था । मैं पलटना चाहती थी, मगर नहीं । मुझमें भी एक अहम था कि वह आए और कुछ बोले। लेकिन वह आ ही नहीं रहा था ।

मैं जल्दी–जल्दी अपने कमरे में पहुँचकर उसे छुपकर और पलटकर देखने लगी । वह वहाँ नहीं था । मैं उदास चेहरा लिए जैसे ही पलटी तो वह मेरे पीछे ही खड़ा था । मैं सहम–सी गई । उसने फिर से मेरा हाथ पकड़ लिया । तभी मम्मी ने तेज आवज लगाई । उनकी आवाज सुनकर मेरा शरीर कँपकँपा गया पर वह था कि मेरा हाथ छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहा था । मैं उसे और अपने हाथ को ही देख रही थी कि मेरी आँखों से टप–टप आँसू बहने लगे । मैं अपना हाथ छुड़ाने के लिए गिड़गिड़ाने लगी ।

मुझे याद है, जब मैं स्कूल में पढ़ती थी । छुट्‌टी के बाद वह मुझे रोज मिलता था और कहता था–'रिश्ता है प्यारा–प्यारा, दोस्ताना है हमारा ।' बोलते हुए उसकी हँसी और ठिठोली कितनी अच्छी लगती थी, उस पर छोटे–छोटे से हम कैसे गली की सबसे ऊँची छत पर जाकर पतंग उड़ाया करते थे । वह मुझे सिखाता था । गली के सभी लोगों के काम करता था । किसी का दूध लाना, किसी की सब्जी, किसी के लिए कुछ पर वह तो अलग ही लग रहा था ।

मुझे याद है, उसका यही एक पुराना ठिकाना था जहाँ वह हमेशा खड़ा रहता था । दीवार की वह बाउंड्री जिसके सहारे वह खड़ा पल–पल मेरी राह ताकता रहता था । गली में लोग और भी हुआ करते थे लेकिन हमारी दोस्ती तो सबसे अलग थी । दिनभर खेलना और घूमना बहुत अच्छा लगता था । वह एक रुपये की साइकिल लेकर चलाना, मुझे

परिचय

जन्म : २१ जनवरी २००२, डॉ. आंबेडकर नगर, दक्षिणपुरी, नई दिल्ली

परिचय : दिल्ली की आसपास की कामगार बस्तियों के तरुण–युवा लेखकों की रचनाओं को 'अंकुर' 'घुसपैठिये' नामक स्तंभ में स्थान देती रही है । चेतना जी इस पत्रिका में तीन सालों से नियमित लिख रही हैं ।

गद्‌य संबंधी

सत्य कहानी : जब कहानी पूर्णतः किसी सत्य घटना पर आधारित हो और घटना के पात्रों को ज्यों का त्यों कहानी में रेखांकित किया हो तो वह सत्य कहानी का रूप ले लेती है।

प्रस्तुत सत्य कहानी के माध्यम से युवा अवस्था की दहलीज पर कदम रखते युवक–युवतियों की दोस्ती, उनके आपसी लगाव, निश्छल प्रेम, रूठना–मनाना, उनकी मित्रता के प्रति समाज के दृष्टिकोण को रेखांकित किया गया है ।

सिखाना, वे दिन मेरे दिमाग में आ-जा रहे थे । मुझे याद है, जब वह नहीं दिखता था, तब मेरी नजरें बेचैनी से उसे खोजती थीं । कुछ समय के बाद मैं जब उस जगह से गुजरती थी तो पीछे मुड़-मुड़कर देखती रहती पर वह नजर ही नहीं आता था । उसे वहाँ न देखकर मेरी आँखें भर जातीं और दिल बेचैन हो जाता । मैं कुछ आगे बढ़कर पेड़ के सहारे खड़ी हो, उसके आने का इंतजार करती । घर पहुँचकर भी दिमाग उसके खयालों में डूबा रहता । आखिर उसे क्या हुआ ? मेरे मन में तरह-तरह के ख्याल आने लगे थे । न मेरा दिन कटता था और न सवाल रुकते थे ।

दूसरे दिन फिर से वही ठिकाना, वही पेड़, वही समय और वही मेरा पलट-पलटकर देखना लेकिन आज जब वह मुझे नजर आया तो मन के सारे अहसास अचानक होठों पर आकर थम गए । आँखें सवालों से भर गईं । तभी मैंने तेजी से उसका हाथ झटककर अपना हाथ छुड़ाया और वह भी मेरे पीछे-पीछे आने लगा । उसे देखते ही मम्मी ने पूछा, ''क्या हुआ तुम्हें ? तुम दोनों इतने गुस्से में क्यों हो ?''

मैं अंदर वाले कमरे में चली गई । वह हँसता हुआ कमरे की चौखट को देखते हुए बोला, ''आंटी, आपकी लड़की पागल हो गई है, कुछ समझती ही नहीं, कुछ बोलो तो भड़क जाती है, न सुनने की तो मानो इसने कसम खा ली है।''

मैं अंदर से बोली, ''माँ, यह चाय पीने आया है, इसे चाय पिलाओ और भेजो ! मुझे इससे कोई बात नहीं करनी ।''

मम्मी ने धीरे से हँसते हुए कहा, ''देख लो इतने दिन गायब होने का नतीजा, वैसे कहाँ था इतने दिन ?''

वह झिझकता हुआ बोला, ''कुछ नहीं ऐसे ही ।''

'हाँ-हाँ, ऐसे ही दिमाग खराब है न तेरा !'' मैंने कहा ।

उसकी नजरें झुकी हुई थीं । कहीं भी नहीं देख रहा था । ऐसा लगता था कि जैसे वह किन्हीं बातों में खो गया है । उस दिन को मैं कभी नहीं भूलती जब वह बिना बताए चला गया था । घनी गर्मी का दिन था । हमारे स्कूल की छुट्टियाँ पड़ने वाली थीं । हमने उस दिन प्लान बनाया था कि हम मार्केट में पतंग की दुकान पर जाएँगे और पाँच-पाँच रुपये वाली चार पतंगें खरीदेंगे फिर गली के कोने वाले घर की छत पर जाएँगे । हमे पतंग उड़ाने के लिए सिर्फ दोपहर का ही वक्त मिलता था । मैं स्कूल से आकर, जल्दी से अपनी ड्रेस बदलकर तैयार हो गई थी । घर के दरवाजे पर खड़ी थी । वह आएगा मुझे मालूम था । मैं गली की दोनों ओर देख रही थी। कितना वक्त हो चुका था इसकी भनक तक नहीं थी । मैं बस देखे जा रही थी । मम्मी भी आज आने में लेट हो गई थीं । घर में कोई नहीं था । गली में धूप कम होने लगी थी, यह देखकर लग रहा था कि काफी टाइम हो

श्रवणीय

अपने मित्र/सहेली के स्वभाव की विशेषताओं को कक्षा में सुनाइए ।

लेखनीय

'मित्रता के लिए कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं होती' इसपर अपने विचार लिखिए ।

गया है । मैं वहीं पर खड़े-खड़े यह भी सोच रही थी कि काश ! मम्मी भी आ जाएँ तो मैं उसके घर जाकर देखती । मैं खड़े-खड़े थक गई थी । मैं जेसे ही घर के अंदर जाने लगी तो मम्मी को आते देखा । मैं खुश हो गई । मम्मी के आते ही बोली, ''मम्मी, मैं अभी आती हूँ।'' यह कहकर चली गई । मैं तेज-तेज चल रही थी । उसके घर पहुँची तो पाया कि उसके घर पर ताला लगा है । मैंने उनके पड़ोस में रहने वाली अपनी सहेली से पूछा कि, ''रोहन कहाँ गया है ?'' तो वह तुरंत ही बोली कि, ''ये सभी शादी में गए हैं ।'' यह सुनकर मैं वहाँ से चली आई कि अब आएगा तो बात नहीं करूँगी ।

✲ दो दिनों तक मैंने उसका नाम भी नहीं लिया था । उसे पूरी तरह से भूल चुकी थी । लेकिन एक दिन सोचा कि अब जाकर देखती हूँ शायद वे लोग आ गए होंगे । बेमन से मैं उसके घर गई । उसका घर खुला था । उसकी मम्मी बाहर ही खड़ी थीं । लाइट नहीं थी । घर में अँधेरा था । मैंने उसकी मम्मी से पूछा, ''आँटी, रोहन कहाँ है ?'' तो वह बोलीं, ''वह तो अपने मामा के घर ही रुक गया।'' यह सुनकर मैं बहुत दुखी हुई थी । फिर मैंने पूछा, ''वह कब आएगा ?''

वह बोलीं, ''अब तो वह तभी आएगा जब कुछ सीख लेगा।''

इतना कहकर वह अंदर चली गई । लाइट आ गई थी । मैं उसकी माँ से और भी कुछ पूछना चाहती थी लेकिन लाइट आने के कारण वह अंदर चली गई थीं । आज पहली बार लाइट के आने का दुख हो रहा था ।

और, आज यह मेरे सामने सिर झुकाकर बैठा था ।

मम्मी तेजी से हँसती हुई हाथ में चाय की ट्रे लिए किचन से बाहर निकलीं । वह सीढ़ियों पर बैठा था । उसने चाय का कप उठाया और कुछ नमकपारे भी ले लिए । चाय की चुसकी लेते हुए बोला, ''वाह आंटी! आपके हाथों की चाय आज भी उतनी ही कड़क है, किसी को मिल जाए तो उसका दिमाग ही खुल जाए ।''✲

मैंने बाहर आकर कहा, ''माँ, यह तुम्हें चढ़ा रहा है!'' तभी मेरी मम्मी उसको तिरछी नजरों से देखते हुए बोली, ''क्या मैं चाय अच्छी नहीं बनाती ?''

''हाँ बताओ भाई, क्या आंटी चाय अच्छी नहीं बनातीं ?''

'' मैं कुछ नहीं बोली ।''

उसी ने आँखों को मटकाते हुए बोला, ''हाँ, आप बहुत बढ़िया चाय बनाती हैं । यह तो बस किसी को पागल बना सकती है ।''

माँ ने अब वही बात पूछ डाली जो मेरे मन में चल रही थी । ''सुना है तू अपने मामा के यहाँ पर था इतने समय । वहाँ करता क्या था तू ?''

वह बोला, ''काम, काम और बस काम । पापा ने मुझे वहाँ पर यह कहकर रुकने को कहा कि तू कुछ सीख लेगा । लेकिन मामा ने मुझे अपनी

पठनीय

'ईसप' पुस्तक से मित्रता पर आधारित कहानियाँ पढ़िए ।

✲ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) आकृति पूर्ण कीजिए :

लेखिका ने देखा तो
रोहन का घर

(२) उत्तर लिखिए :

(क) लेखिका को लाईट आने का दुख हुआ कारण.........

(ख) रोहन के अनुसार आंटी के हाथों की चाय की विशेषता ....

(ग) रोहन का मामा के घर रुकने का कारण ....

मौलिक सृजन

मेरे मित्र/सहेली के आचार-विचार मेरे जीवन के मार्गदर्शक हैं । टिप्पणी लिखिए ।

दुकान पर रख लिया । बस मैं वहीं था । मैं मेकैनिक तो बन गया आंटी मगर ...'' वह बोलते-बोलते रुक गया । शायद उसकी चुप्पी में ही उसका असली जवाब छुपा था ।

उसकी चाय का कप खाली हो गया था । वह बोला, ''चाय तो खत्म हो गई !'' मैंने कहा, ''चल जल्दी से अपने घर जा वरना बहुत मारूँगी !''

वह मुस्कराते हुए बोला, ''अरे, जा रहा हूँ, तू इतना क्यों भड़क रही है ?'' कुछ समय बाद जब वह जाने ही वाला था कि मैंने पूछा, ''फिर कब आएगा ?''

उसने बड़े ताव से जवाब दिया, ''कभी भी, जब मन करे, पर तुझे आना है तो कभी भी आ जाना, तेरे लिए तो मेरे घर के दरवाजे हमेशा खुले हैं ।'' चंद पलों बाद वह चला गया और जाते-जाते आँखों को मटकाते हुए बोला, ''सॉरी, गलती हो गई, मिलेंगे, बॉय ।''

उसके पीछे मुड़ते ही मैंने उससे पूछा, ''तू था कहाँ इतने दिन ?'' वह मुस्कराने लगा और बोला, ''यह बड़ा हो जाना भी न, एक जुर्म ही है । इसकी लंबी सजा है ।'' यह कहकर वह चलने लगा । वह कुछ कहता हुआ, कदमों को आगे बढ़ाता हुआ अपने घर की तरफ रवाना हो गया ।

मैं उसकी यह बात पूरी तरह से समझ गई थी ।

आज उसका हाथ पकड़ना सभी को दिख रहा था । लेकिन यह नहीं दिख रहा था कि बचपन में छोटे-छोटे से हम दोनों कैसे गली की सबसे ऊँची छत पर जाकर पतंग उड़ाया करते थे ।

आसपास

आपके किसी दोस्त/सहेली द्वारा किए गए सराहनीय कार्य की कक्षा में चर्चा कीजिए ।

7XHAVV

पाठ से आगे

'विश्वबंधुता की नींव आपसी विश्वास पर खड़ी होती हैं', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए

१. पंतग उड़ाने के लिए सिर्फ ....
   (क) शाम का वक्त मिलता था ।
   (ख) सुबह का वक्त मिलता था ।
   (ग) दोपहर का वक्त मिलता था ।

२. आज वह पूरे ....
   (क) तीन साल के बाद दिखाई दिया था ।
   (ख) पाँच साल के बाद दिखाई दिया था ।
   (ग) दो साल के बाद दिखाई दिया था ।

(ख) संजाल पूर्ण कीजिए :

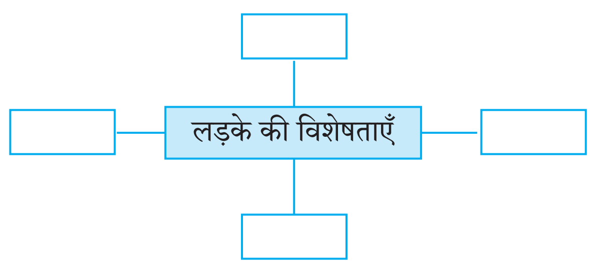

(२) पाठ में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।

(३) अपने बचपन में घटी संस्मरणीय घटना का वर्णन कीजिए ।

रचना बोध

....
....
....

भाषा बिंदु

(१) इस निबंध के अंश पढ़कर विदेशी, तत्सम, तद्भव शब्द समझिए ।
इसी प्रकार के अन्य पाँच-पाँच शब्द ढूँढ़िए ।

कुछ भाषाओं के शब्द किसी भी अन्य भाषा से मित्रता कर लेते हैं और उन्हीं में से एक बन जाते हैं । अंग्रेजी भाषा के कई शब्द जिस किसी प्रदेश में गए, वहाँ की भाषाओं में घुलमिल गए । जैसे- 'बस, रेल, कार, रेडियो, स्टेशन' आदि । कहा जाता है कि तमिळ भाषा के शब्द केवल अपने परिवार द्रविड़ परिवार तक ही सीमित रहते हैं । वे किसी से घुलना, मिलना नहीं चाहते । अलबत्ता हिंदी के शब्द मिलनसार हैं परंतु सब नहीं; कुछ शब्द तो अंत तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखते हैं । अपने मूल रूप में ही वे अन्य स्थानों पर जाते हैं । कुछ शब्द अन्य भाषा के साथ इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि उनका स्वतंत्र रूप खत्म-सा हो जाता है ।

हिंदी में कुछ शब्द ऐसे भी पाए जाते हैं जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों के मेल से बने हैं । अब वे शब्द हिंदी के ही बन गए हैं । जैसे- हिंदी-संस्कृत से वर्षगाँठ, माँगपत्र; हिंदी-अरबी/फारसी से थानेदार, किताबघर; अंग्रेजी-संस्कृत से रेलयात्री, रेडियोतरंग; अरबी/फारसी-अंग्रेजी से बीमा पॉलिसी आदि । इन शब्दों से हिंदी का भी शब्द संसार समृद्ध हुआ है । कुछ शब्द अपनी माँ के इतने लाड़ले होते हैं कि वे माँ-मातृभाषा को छोड़कर औरों के साथ जाते ही नहीं । कुछ शब्द बड़े बिंदास होते हैं, वे किसी भी भाषा में जाकर अपने लिए जगह बना ही लेते हैं ।

शब्दों के इस प्रकार बाहर जाने और अन्य अनेक भाषाओं के शब्दों के आने से हमारी भाषा समृद्ध होती है । विशेषतः वे शब्द जिनके लिए हमारे पास प्रतिशब्द नहीं होते । ऐसे हजारों शब्द जो अंग्रेजी, पुर्तगाली, अरबी, फारसी से आए हैं; उन्हें आने दीजिए । जैसे- ब्रश, रेल, पेंसिल, रेडियो, कार, स्कूटर, स्टेशन आदि परंतु जिन शब्दों के लिए हमारे पास सुंदर शब्द हैं, उनके लिए अन्य भाषाओं के शब्दों का उपयोग नहीं होना चाहिए । हमारे पास 'माँ' के लिए, पिता के लिए सुंदर शब्द हैं, जैसे- माई, अम्मा, बाबा, अक्का, अण्णा, दादा, बापू आदि । अब उन्हें छोड़ मम्मी-डैडी कहना अपनी भाषा के सुंदर शब्दों को अपमानित करना है ।

हमारे मुख से उच्चरित शब्द हमारे चरित्र, बुद्धिमत्ता, समझ और संस्कारों को दर्शाते हैं इसलिए शब्दों के उच्चारण के पूर्व हमें सोचना चाहिए । कम-से-कम शब्दों में अर्थपूर्ण बोलना और लिखना एक कला है । यह कला विविध पुस्तकों के वाचन से, परिश्रम से साध्य हो सकती है । मात्र एक गलत शब्द के उच्चारण से वर्षों की दोस्ती में दरार पड़ सकती है । अब किस समय, किसके सामने, किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए इसे अनुभव, मार्गदर्शन, वाचन और संस्कारों द्‌वारा ही सीखा जा सकता है । सुंदर, उपयुक्त और अर्थमय शब्दों से जो वाक्य परीक्षा में लिखे जाते हैं उस कारण ही अच्छी श्रेणी प्राप्त होती है । अनाप-शनाप शब्दों का प्रयोग हमेशा हानिकारक होता है ।

प्रत्येक व्यक्ति के पास स्वयं की शब्द संपदा होती है । इस शब्द संपदा को बढ़ाने के लिए साहित्य के वाचन की जरूरत होती है । शब्दों के विभिन्न अर्थों को जानने के लिए शब्दकोश की भी जरूरत होती है । शब्दकोश का एक पन्ना रोज एकाग्रता से पढ़ोगे तो शब्द संपदा की शक्ति का पता चल जाएगा ।

तो अब तय करो कि अपनी शब्द संपदा बढ़ानी है । इसके लिए वाचन-संस्कृति को बढ़ाओ । पढ़ना शुरू करो । तुम भी शब्द संपदा के मालिक हो जाओगे ।

(डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का निबंध 'शब्द संपदा' से साभार)

(२) उपर्युक्त अंश से पंद्रह शब्द ढूँढ़िए उनमें प्रत्यय लगाकर शब्दों को पुनः लिखिए ।